ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department of- History -Subsidiary
29-05-2020 B.A I - [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang [Notes]

महमूद गजनवी के आक्रमण का परिणामः

महमूद गजनवी का आक्रमण भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह सच है कि महमूद गजनवी ने भारत में स्थायी साम्राज्य की स्थापना नहीं की। वह 17 वर्षों तक भारत के समृद्धशाली राज्यों का लूट-खसोट करता रहा और अपार सम्पत्ति गजनी ले जाने में सफल रहा। गजनवी के आक्रमण के पूर्व विदेशी आक्रमणकारी भारत में ही बस जाते थे और राष्ट्र का धन राष्ट्र में ही रह जाता था। परन्तु महमूद गजनवी भिन्न प्रकार का आक्रमणकारी था। वह धन-लोलुप था और उसकी धन-लोलुपता उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती थी। भारत एक समृद्ध देश था। सदियों से मन्दिरों, नगरों एवं राजप्रासादों में संग्रह किए हुए धन को लूटकर ले जाने से महमूद की धन-लोलुपता सुरसा की तरह प्रति वर्ष बढ़ती गयी और उसकी लूट-खसोट की नीति के कारण भारत को अपार धन-जन की क्षति हुई।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न भारत निर्धनता की ओर उन्मुख हो गया। लगातार युद्ध और विरोध के कारण हजारों - हजारों व्यक्तियों को निर्दयता के साथ मौत के घाट उतारने में महमूद को कोई हिचकिचाहट नहीं होती थी।

भारत की सैनिक शक्ति पर भी महमूद के आक्रमण का परिणाम घातक सिद्ध हुआ। भारतीय सैनिकों में साहस एवं वीरता का अभाव नहीं था। वे युद्ध-क्षेत्र से भागने के बदले मौत को अधिक श्रेष्ठ मानते थे। अतः युद्ध में साधारण नागरिकों के साथ असंख्य सैनिकों की जानें चली गयी। इस दृष्टि से भारत की सैनिक शक्ति को अपार क्षति हुई। महमूद नगरों, मठों और मन्दिरों को नष्ट कर देता था। भारतीय मन्दिर, मठ और नगर वास्तुकला के उत्तम उदाहरण थे। सोमनाथ, मथुरा, वृन्दावन, कन्नौज आदि नगर सभ्यता एवं स्थापत्य-कला की दृष्टि से अद्वितीय माने जाते थे। महमूद ने मूर्तियों को नष्ट कर कलाकृतियों की हत्या कर दी। भारत में प्रवेश पाने के लिए उत्तर-पश्चिम सीमा पर स्थित हिन्दूशाही राजा प्रहरी का काम करते थे। अफगानिस्तान, मुलतान, सिन्ध और पंजाब - विजय के

बाद भारतीय सीमा की रक्षा करनेवाला कोई प्रहरी राज्य नहीं रहा और भारत के अन्दर प्रवेश पाने की कठिनाई जाती रही। वस्तुतः महमूद गजनवी इन क्षेत्रों पर अधिकार कर विदेशियों के प्रवेश के लिए द्वार खोल दिया था। विदेशी भारतीय स्थिति की सही जानकारी सुविधासे प्राप्त कर लेते थे। भारतीय सैनिकों की त्रुटियों से वे परिचित हो गये और वस्तुस्थिति की जानकारी हासिल कर वे बार-बार भारत पर आक्रमण करने लगे।

अरबवालों ने सिन्ध पर अधिकार कर जो भूल की थी उसे महमूद गजनवी के आक्रमण ने परिमार्जित कर दिया। भारत में प्रवेश कर और समृद्ध शहरों को नष्ट कर उसने न केवल आर्थिक लाभ प्राप्त किया, बल्कि भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना के लिए अग्रदूत की तरह काम किया।

भारत में महमूद गजनवी के आक्रमण से इस्लाम धर्म का प्रचार सरल हो गया। बहुत-से मुसलमान सन्त और मौलवी सीमा-क्षेत्र में स्थायी रूप से बस गये। बलपूर्वक हिन्दुओं को इस्लाम धर्म में दीक्षित कर लिया जाता था। एक बार इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने वाले हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में सम्मिलित नहीं किया जाता था।

Date
Page

महमूद गजनवी पहला आक्रमणकारी था जिसने शक्ति के सहारे इस्लाम धर्म का प्रचार भारत में किया था। बर्बरता, निर्दयता एवं लूट-खसोट की नीति अपनाने से भारत में इस्लाम धर्म के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न हुए।

परन्तु हिन्दू समाज का उपेक्षित वर्ग इस्लाम धर्म के प्रति अधिक आकृष्ट हुआ और वह सुविधा और प्रतिष्ठा पाने के लालच से इस्लाम धर्म में दीक्षित होने लगा। इस दृष्टि से महमूद गजनवी ने भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार कर भावी मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के लिए आधारशिला तैयार कर दी।

महमूद गजनवी हिन्दुओं को बन्दी बनाकर दास बना लेता था। गजनी में ऐसे दासों की संख्या बहुत बढ़ गयी। धन और दास की सुविधा ने मुसलमानों को विलासी बना दिया। उनकी सैनिक क्षमता क्षीण हो गयी और अन्ततः गजनवी साम्राज्य का पतन हो गया।